RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 36 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 26 नवम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–74, अंक : 36, 23-26 नवम्बर 2017 तदनुसार 11 मार्गशीर्ष सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

शरीर–वर्णन

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इदं वपुर्निवचनं जनासश्चरन्ति यन्नद्यस्तस्थुरापः।
द्वे यदीं बिभृतो मातुरन्ये इहेह जाते यम्या३ सबन्धू।।

–ऋ० ५।४७।५

शब्दार्थ – **यत** = जैसे **आपः** = जल **नद्यः** = नदियों में **तस्थुः** = रहते हैं, ऐसे **जनासः** = लोग **इदम्** = इस **निवचनम्** = विशेष प्रशंसनीय **वपुः** = शरीर में **चरन्ति** = विचरते हैं। **इह+इह** = यहीं ही **सबन्धू** = समानबन्धु **यम्या** = जोड़िये **जाते** = उत्पन्न हुए **मातुः** = माता से **अन्ये** = भिन्न **द्वे** = दो **यत्** = जिसको **बिभृतः + ईम्** = धारण करते हैं।

व्याख्या–'नदी' यहाँ उपलक्षण है समस्त जलाशयों का। जिस प्रकार जल जलाशयों में रहता है, ऐसे ही आत्मा इस शरीर में रहता है, विचरता है। यह शरीर 'निवचन' है। यह शरीर, विशेषकर मनुष्य–शरीर बहुत प्रशंसनीय है। वेद में इसे रथ, कलश, अपराजिता नगरी, अयोध्या, देवपुरी, ब्रह्मपुरी, नौका आदि विविध नामों से पुकारा गया है। ऐतरेय–उपनिषद् में इस शरीर की महिमा एक कथानक के द्वारा वर्णन की गई है। वहाँ कहा गया है कि आत्मा के आगे गौ–आदि पशुओं के शरीर लाये गये, आत्मा को वे पसन्द न आये। जब इसके सामने मानव–देह लाया गया तो आत्मा प्रसन्न हो उठा और कहने लगा **'सुकृतं बत इति'** = यह बहुत अच्छा बना है। निःसन्देह मानव–शरीर बहुत उत्तम और अद्भुत है। सब इन्द्रियाँ यथायोग्य स्थान पर हैं। मानव–शरीर में एक ऐसी इन्द्रिय है जो अन्य पशु–आदिक के पास नहीं है, वह है वागिन्द्रिय, जिससे मनुष्य अपने मनोगत–भाव दूसरों पर व्यक्त कर सकता है। इस वागिन्द्रिय के कारण मनुष्य **'व्यक्तवाक्'** कहलाता है। दूसरे पशुओं को **'अव्यक्तवाक्'** = कहते हैं। यह अपने दुःख–सुख की कहानी कह सकता है, दूसरे पशु–पक्षी नहीं।

इसी शरीर में प्रकृति माता की दो सन्तानें रहती हैं जो एक–दूसरे से भिन्न हैं और इस शरीर को धारण कर रही है। देखिए–ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ, दोनों प्रकृति–माता की वर सन्तानें हैं, दोनों का स्वभाव एक–दूसरे से भिन्न है। एक–ज्ञानेन्द्रियवर्ग–बाहर का ज्ञान अन्दर पहुँचा रहा है। दूसरा–कर्मेन्द्रियवर्ग–अन्दर के भावों को बाहर प्रकट कर रहा है। हैं ये दोनों सबन्धू। आत्मा ही इनका बन्धु है और ये जोड़िये हैं। शरीर में आत्मा के प्रवेश के साथ ही इनकी रचना आरम्भ हो जाती है और जब माता के गर्भ से शरीर बाहर आता है तो शरीर में ये दोनों प्रकार के इन्द्रिय उपस्थित होते हैं, अतः वेद इन्हें **यम्या** = जोड़िये कहता है। इसी प्रकार प्राण और अपान एक वायुमाता के दो सन्तान इस देह में कार्य कर रहे हैं। एक बाहर से अन्दर जा रहा है, एक अन्दर से बाहर आ रहा है। ये भी उसी प्रकार सबन्धू और यम्य हैं। ये दोनों एक–दूसरे से भिन्न होते हुए भी शरीर का धारण कर रहे हैं। इसी शरीर में पाप–पुण्य कर्म किये जाते हैं। दोनों की माता आकूति=सङ्कल्प=इरादा है। दोनों का परिणाम भिन्न–भिन्न है। इस प्रकार विचारने से सिद्ध होता है कि और भी कई जोड़िये यहाँ काम कर रहे हैं, विस्तार–भय से उनकी यहाँ चर्चा नहीं करते।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

सुवीरं रयिमाभर जातवेदो विचर्षणे।
जहि रक्षांसि सुक्रतो।। **–ऋ० ६.१६.२९**

भावार्थ–हे परमात्मन्! दानवीर कर्मवीरादि पुरुषों से युक्त धन हमें प्रदान करो। हम दीन मलीन पराधीन दरिद्री कभी न हों। हे महासमर्थ प्रभो! दुष्ट राक्षसों का दुष्ट स्वभाव छुड़ा कर, उनको धर्मात्मा श्रेष्ठ बनाओ, जिससे वे लोग भी किसी की कभी हानि न कर सकें।

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत।। **–ऋ० ८.६.२८**

भावार्थ–मोक्षार्थी पुरुष को चाहिये कि वह एकान्त देश में जैसे पर्वतों की गुफा में व नदियों के संगम पर बैठ कर परमात्मा का ध्यान करे और एकान्त देश में ही वेदों के पवित्र मन्त्रों का विचार करे। तब ही वह विप्र और ब्राह्मण कहलाने के योग्य है। ब्राह्मण शब्द का भी यही अर्थ है कि ब्रह्म जो शब्द ब्रह्म वेद है, इसके पठन और विचार आदि से ब्राह्मण होता है, और ब्रह्म अविनाशी सर्वत्र व्यापक परमात्मा का जो ज्ञानी भक्त है वही ब्राह्मण कहलाने योग्य है। इसी ज्ञानी को विप्र भी कहते हैं, ऐसे वेदवेत्ता प्रभु के अनन्य भक्त ही ब्राह्मण होने चाहिये, न कि रसोई बनाने वाले बनियों की व्यापार वृत्ति व नौकरी करने वाले।

भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्याभर।
भूरि घेदिन्द्र दित्ससि।। **–ऋ० ४.३२.२०**

भावार्थ–हे सर्व ऐश्वर्य के स्वामी परमात्मन्! आप अपने सेवकों को बहुत ही धनादि पदार्थ देते हो, हमें भी बहुत दो, थोड़ा नहीं, क्योंकि आपका स्वभाव ही बहुत देने का है, सदा बहुत देने की इच्छा करते हो। भगवन् ! धनादि पदार्थों को प्राप्त होकर, उनको अच्छे कामों में हम लगावें, बुरे कामों में नहीं, ऐसी ही आपकी प्रेरणा हो। हम धर्मात्मा और धनी ज्ञानी बनकर आपके ज्ञान और धर्म के फैलाने वाले बनें, जिससे कि हम सबका कल्याण हो।

परमपिता परमात्मा का आदेश-"मनुर्भव"

ले०-आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री आर्यसमाज बाहरी रिंगरोड, विकासपुरी नई दिल्ली

अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि है, भारत मानवता की जन्मभूमि है। नर का तन मिलना हमारे कर्मों के फल के अनुसार ईश्वरीय विधान है परन्तु विशेष विचारणीय यह है कि नरतन की सार्थकता उसकी पूर्णता तभी है जब उसमें नरमन की भी प्रतिष्ठा हो।

मनुष्य मननशील है। वह कर्मों को बुद्धिपूर्वक विचार कर करता है (मत्वा कर्माणि सीव्यति)। यहाँ प्रसंगवश यह भी हम उल्लेख करना चाहेंगे कि हम त्याग का, वैराग्य का, संयम का उपदेश देने वालों के इस मत से सहमत नहीं है कि वह मन को मारे, क्योंकि मन है तो मनन होगा, मन की उपमा हम घर के भण्डार से दे सकते हैं जहाँ हम आवश्यकता का सामान एकत्र करते हैं। मन में हम दूसरों से जो प्रेम, संवेदना, सहानुभूति और मैत्री प्राप्त करते हैं, ये सभी सुरक्षित रहते हैं। जिस प्रकार घर की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने वाली एक गृहिणी भण्डार गृह में क्या हो, क्या नहीं हो इसका निर्णय अपने विवेक से करती हैं, उसी प्रकार बुद्धि मन को नियन्त्रण में रखे यह बात तो समझ में आ सकती है, जो कुछ भी मधुर, प्रिय हो, उपयोगी हो वह मन में अवश्य रखा जाये। जो हमारे काम का नहीं जिसमें कटुता हो वह हम दूर फेंक दें। "तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु" आदि मंत्रों का सार तभी समझ सकते हैं जब हम अप्रिय घृणा, द्वेष आदि दुर्गणों को मन से निकालें और हितचिन्तन को प्रश्रय दें।

वेद ने मनुष्य की यही इतिकर्त्तव्यता नहीं मानी है कि वह केवल मनुष्य को ही हितचिन्तन की परिधि में ले, हमें तो समभाव और दयाभाव अन्य प्राणियों में भी बांटना है, यह हमें देवत्व की कोटि में लाता है। यहीं नहीं हम जितनी अवधि संसार में व्यतीत करते हैं, बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक जो भी हमारा उपार्जन है उसका श्रेय मात्र हमारा ही नहीं है इसके लिये हम अन्यों के भी ऋणी है, इस ऋण से उऋण होने का मार्ग यही है कि हम इस क्रम में व्यतिक्रम न आने दें और इसके लिए हम ज्योतिर्मय पथों की रक्षा करने वाली, जागरण प्रहरी बन सके ऐसी उत्तम सन्तान भी संसार को देकर जाये।

गमों की आँख से आँसू निकाल कर देखो।

बनेंगे रंग किसी पर डाल कर देखो।

तुम्हारे हृदय की चुभन कम होगी जरूर।

किसी के पैर का कांटा निकाल कर देखों।

यदि अग्नि एवं वायु में गतित्व तथा जल में जलत्व न हो तो क्या आप उसे अग्नि, जल वायु कहेंगे? उत्तर मिलेगा नहीं। ठीक इसी तरह मानव में मानवता न हो तो वह मनुष्य नहीं कहलायेगा। वैदिक संस्कृति विश्ववारा संस्कृति है-इसका उद्देश्य है मानव का निर्माण-दिव्य उद्बोधन है। परमपिता परमात्मा का आदेश है-"मनुर्भव"।

ओ३म् तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।

अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।

ऋ० १०/५३/६

निजकर्म को करते हुए, आलोक का अनुगमन करो

विज्ञानप्रद आलोक के शुभमार्ग की रक्षा करो।

उलझन रहित कर्त्तव्य के, तुम विश्व विस्तारक बनो,

मानव बनो! मानव बनो! तुम दिव्यतम मानव बनो।।

जहाँ तक इस मन्त्र की महत्ता का प्रश्न है कि यदि वेद में केवल यही एक मन्त्र होता तो भी अन्य ग्रन्थों की तुलना में वेद ही सर्वोपरि स्थान का अधिकारी होता। आज विश्व में कोई ईसाई बनाने में शक्ति लगाता है, कोई बौद्ध बनाने में, कोई मुसलमान बनाने में तत्पर है। वेद कहता है "मनुर्भव"-मनुष्य बन। ईसाई बनने पर व्यक्ति केवल ईसाइयों को ही ममत्व से देखेगा। मुसलमान बनने पर वह केवल मुस्लिम व्यक्ति से ही प्यार करेगा किन्तु मनुष्य बनने पर तो सारा संसार उसका परिवार होगा, "वसुधैव कुटुम्बकम्" वसुधा ही कुटुम्ब समान है, सब पर हमारा एक समान प्यार होगा।

एक बाप के बेटे हैं सारे, एक हमारी माता

दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता

फिर किस मूरख ने लड़ना तुम्हें सिखाया।

सबसे कर लो प्रेम जगत् में कोई नहीं पराया।

जातिवाद, एवं सम्प्रदायवाद के दलदल से हटकर हम मानवतावाद को जीवन में लायें।

अग्नि हमें उन्नति की राह दिखाती है, विरोध के मध्य भी प्रलोभन की चमक से और आतंक की निरंकुशता से हम दबे नहीं, वरन् हमारा स्वर और भी प्रखर और मुखर हो ये हमें अग्नि से सीखना है। वह हमारी परीक्षा लेती है, उसके ताप से भोजन पकाकर हम स्वयं तो खा लेते हैं लेकिन वह यह भी जानना चाहती है कि वैसा ही भोजन दूसरों को प्राप्त कराने की कितनी व्यग्रता हमारे हृदय में है।

वेदोद्धारक देव दयानन्द महाराज मनुष्य की परिभाषा बताते हुए कहते हैं-"मनुष्य उसी को कहना, **जो मनन शील हो, स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि लाभ को समझे। पापी, दुष्ट, अन्यायी, अत्याचारी चाहे कितना ही सशक्त हो, चाहे चक्रवर्ती सम्राट भी क्यों न हो उससे कभी न डरे उसका प्रतिवाद, अप्रियाचरण सदा करे और धर्मात्मा चाहे निर्बल हो, निर्धन हो उसका सत्कार, प्रियाचरण सदा करे। जहाँ तक हो सके अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जावे, परन्तु, इस मनुष्यपन-रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।**" आगे बढ़ने से पूर्व हम पूछना चाहेंगे दुनियों के लोगों से इससे पूर्णतर मनुष्य की कोई परिभाषा कहीं देखी है क्या। पर किसे चिन्ता है दयानन्द की इस परिभाषा की। मिले यह या कोई और मनुष्य की परिभाषा हमें, थी और है ऐसी आशा हमें।

मानवता का दूसरा नाम है, दूसरों के प्रति हम कितने संवेदनशील है? क्या हम वास्तव में ऐसे मर्द है जो किसी का दर्द लेकर हमदर्द बन सकें?

दर्द दूसरों को बांटे शैतान वही है।

दर्द दूसरों का बांटे इंसान वही है।

हमारा अपना शरीर हमें परोपकारमयी मानवता का पाठ पढ़ाने वाला सर्वोत्तम शिक्षक है, शरीर के किसी भी अंग में कोई आघात लगता है तो कष्ट का अनुभव सारा शरीर करता है, ध्यान उसी की ओर रहता है। पेट में स्वयं कोई विकार न भी हो किन्तु यदि किसी अन्य अंग में विकार हो तो वह भी अपनी संवेदनशीलता इस रूप में व्यक्त करता है, यह अनुभूत बात है और शरीर के प्रत्येक अंग की यह विशेषता है कि जो भी उसका ग्राह्य है वह औरों के लिए त्याज्य नहीं है, वरन् पौष्टिकता के रूप में वह सभी का भाग बन जाता है। इससे बड़ा समाजवाद और मानववाद का पाठ आदमी और कहाँ पढ़ेगा?

भ्रातृप्रेम का अनूठा उदाहरण हमें मिलता है। एक भाई दूसरे भाई के लिए जान देने के लिए तैयार है। गेंद की तरह गद्दी को ठोकर मारने वाले भाई आज कहां हैं?

जब मेघनाद के बाण से लक्ष्मण मूर्छित हो गये तब राम विलाप करते हुए कहते हैं-

देशे-देशे कलत्राणि देशे-देशे च बान्धवाः।

तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः।।

देश में मुझे जगह-जगह मित्र बन्धु-बान्धव मिल सकते हैं परन्तु मुझे कोई ऐसी जगह दिखाई नहीं देती, जहाँ छोटा भाई मिल जाये। जब लक्ष्मण को होश आया तो लक्ष्मण से पूछा गया लक्ष्मण! तुम्हें कितनी चोट लगी? लक्ष्मण कहते हैं-

इयन्मात्रमहं अहं वेद्मि स्फुटं योवेत्ति राघवम्।

वेदना राघवेन्द्रस्य केवलं व्रणिनो वयम्।।

लक्ष्मण ने कहा कि मैं तो केवल बाण के घाव को ही जानता हूँ, चोट तो राम के हृदय में हुई है। मैं तो केवल मूर्छित हुआ हूँ, वेदना कितनी हुई है यह राम से पूछो। कितना अगाध स्नेह है। मानवता, भ्रातृप्रेम का ऐसा दिव्य उदाहरण और कहाँ मिलेगा? आर्य समाज के दस नियम सार्वभौम मानवधर्म के स्वर्णिम सूत्र हैं। इन नियमों में ईश्वर-अस्तित्व, ईश्वर-उपासना, वेद निष्ठा, सत्यनिष्ठा, धर्माचरण, विस्व का उपकार, यज्ञ भावना, सद्व्यवहार, विद्या-प्रेम, सर्वोदयभावः वैदिक समाजवाद, व्यक्ति और समष्टि का समन्वय आदि मानव धर्म के मूलाधार इन दस स्वर्णिम सूत्रों का समावेश है। ये सभी सूत्र मानव धर्म के प्राण हैं।

(क्रमशः)

सम्पादकीय

सत्यार्थ प्रकाश में मोक्ष प्राप्ति के साधन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मुक्ति के साधनों का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि जो मुक्ति चाहे वह जीवनमुक्त अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि पाप कर्मों का फल दु:ख है, उन को छोड़ सुखरूप फल को देने वाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दु:ख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त करना चाहे वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे। क्योंकि दु:ख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल कारण है।

सत्पुरूषों के संग से विवेक अर्थात् सत्यासत्य, धर्माधर्म कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निश्चय अवश्य करें, पृथक्-पृथक् जानें। और शरीर अर्थात् जीव पञ्चकोषों का विवेचन करें। एक अन्नमय जो त्वचा से लेकर अस्थिपर्यन्त का समुदाय पृथिवीमय है। दूसरा प्राणमय जिसमें प्राण अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता, अपान जो बाहर से भीतर आता, समान जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुंचाता, उदान जिस से कण्ठस्थ अन्न पान खींचा जाता और बल पराक्रम होता है, व्यान जिस से सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। तीसरा मनोमय जिसमें मन के साथ अहङ्कार, वाक्, पाद, पाणि, पायु, और उपस्थ पांच कर्म-इन्द्रियां हैं। चौथा विज्ञानमय जिसमें बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका ये पांच ज्ञानेन्द्रियां जिन से जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। पांचवा आनन्दमय कोश जिसमें प्रीति प्रसन्नता, न्यून आनन्द, अधिकानन्द, आनन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है। ये पांच कोष कहाते हैं। इन्हीं से जीव सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों को करता है।

तीन अवस्था -एक जागृत, दूसरी स्वप्न और तीसरी सुषुप्ति अवस्था कहाती है। तीन शरीर हैं-एक स्थूल जो यह दीखता है। दूसरा पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां,पांच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि इन सत्तरह तत्त्वों का समुदाय सूक्ष्मशरीर कहाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहता है। इसके दो भेद हैं- एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है। दूसरा स्वभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप है। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। तीसरा कारण जिसमें सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा होती है वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है। चौथा तुरीय शरीर वह कहाता है जिसमें समाधि से परमात्मा के आनन्दस्वरूप में मग्न जीव होते हैं। इसी समाधि संस्कारजन्य शुद्ध शरीर का पराक्रम मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है।

इन सब कोष अवस्थाओं से जीव पृथक् है, क्योंकि यह सब को विदित है कि अवस्थाओं से जीव पृथक् है। क्योंकि जब मृत्यु होती है तब सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया। यही जीव सबका प्रेरक, सब का धर्त्ता, साक्षीकर्त्ता, भोक्ता कहाता है। जो कोई ऐसा कहे कि जीव कर्त्ता भोक्ता नहीं तो उसको जानो कि वह अज्ञानी, अविवेकी है। क्योंकि बिना जीव के जो ये सब जड़ पदार्थ हैं इन को सुख दु:ख का भोग वा पाप पुण्य कर्तृत्व कभी नहीं हो सकता। हां इन के सम्बन्ध से जीव पाप पुण्यों का कर्त्ता और सुख दु:खों का भोक्ता है।

जब इन्द्रियां अर्थों में मन इन्द्रियों और आत्मा मन के साथ संयुक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करके अच्छे वा बुरे कर्मों में लगाता है तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय भीतर से आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों में भय शंका लज्जा उत्पन्न होती है। वह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल बर्त्तता है वही मुक्तिजन्य सुखों को प्राप्त होता है और जो विपरीत बर्त्तता है वह बन्धजन्य दु:ख भोगता है। दूसरा साधन वैराग्य- अर्थात् जो विवेक से सत्यासत्य को जाना हो उसमें से सत्याचरण का ग्रहण और असत्याचरण का त्याग करना विवेक है- जो पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव से जानकर उसकी आज्ञा का पालन और उपासना में तत्पर होना, उसके विरूद्ध न चलना, सृष्टि से उपकार लेना विवेक कहाता है।

तत्पश्चात तीसरा साधन-षट्क सम्पत्ति अर्थात् छ: प्रकार के कर्म करना-एक शम जिससे अपने आत्मा और अन्त:करण को अधर्माचरण से हटाकर धर्माचरण में प्रवृत्त रखना। दूसरा दम जिससे श्रोत्रादि इन्द्रियों और शरीर को व्यभिचारादि बुरे कर्मों से हटा कर जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रखना। तीसरा उपरति जिस से दुष्ट कर्म करने वाले पुरूषों से सदा दूर रहना। चौथा तितिक्षा चाहे निन्दा, स्तुति, हानि, लाभ कितना ही क्यों न हो परन्तु शोक हर्ष को छोड़ मुक्ति साधनों में सदा लगे रहना। पांचवा श्रद्धा जो वेदादि सत्य शास्त्र और इनके बोध से पूर्ण आप्त विद्वान् सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करना। छठा समाधान चित्त की एकाग्रता ये छ: मिलकर एक साधन तीसरा कहाता है।

चौथा मुमुक्षुत्व- अर्थात् जैसे क्षुधा तृषातुर को सिवाय अन्न जल के दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता वैसे बिना मुक्ति के साधन और मुक्ति के दूसरे में प्रीति न होना। ये चार साधन और चार अनुबन्ध अर्थात् साधनों के पश्चात ये कर्म करने होते हैं। इनमें से जो एक इन चार साधनों से युक्त पुरूष होता है वही मोक्ष का अधिकारी होता है। दूसरा सम्बन्ध-ब्रह्म की प्राप्ति रूप मुक्ति प्रतिपाद्य और वेदादि शास्त्र प्रतिपादक को यथावत् समझ कर अन्वित करना। तीसरा विषयी-सब शास्त्रों का प्रतिपादन विषय ब्रह्म उसकी प्राप्तिरूप विषय वाले पुरूष का नाम विषयी है। चौथा प्रयोजन- सब दु:खों की निवृत्ति और परमानन्द को प्राप्त होकर मुक्ति सुख का होना। ये चार अनुबन्ध कहाते हैं।

तदनन्तर श्रवणचतुष्टय अर्थात् एक श्रवण- जब कोई विद्वान् उपदेश करे तब शान्त, ध्यान देकर सुनना, विशेष ब्रह्मविद्या के सुनने में अत्यन्त ध्यान देना चाहिए कि सब विद्याओं में सूक्ष्म विद्या है। सुन कर दूसरा मनन अर्थात् एकान्त स्थान में बैठ के सुने हुए पर विचार करना। जिस बात में मन में शंका हो पुन: पूछना और सुनते समय भी वक्ता और श्रोता उचित समझे तो पूछना और समाधान करना। तीसरा निदिध्यासन जब सुनने और मनन करने से निसन्देह हो जाए तब समाधिस्थ होकर उस बात को देखना समझना कि वह जैसा सुना था विचारा था वैसा ही है वा नहीं् ध्यानयोग से देखना। चौथा साक्षात्कार अर्थात् जैसा पदार्थ का स्वरूप गुण और स्वभाव हो वैसा यथातथ्य जाने लेना ही श्रवणचतुष्टय कहाता है।

प्रेम भारद्वाज

संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में विशेष सत्संग

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में नगर की आर्य समाजों का सम्मिलित सत्संग 12 नवम्बर 2017 रविवार प्रात: 8.30 बजे से 11.00 बजे तक हुआ। जिसमें यज्ञ के उपरान्त वेद मंत्र का अर्थ समझाते हुये पंडित बालकृष्ण शास्त्री ने अपने प्रवचन में बतलाया कि मनुष्य के द्वारा किये गये पुण्य कर्म, विकट समय में विजय प्राप्त करा कर उसे सुख पहुंचाने के कारण बन जाते हैं। श्री विजय सरीन, श्रीमती अनुपमा गुप्ता, श्रीमती वीना गुलाटी, कुमारी रमन ने प्रभु भक्ति के मनोहर भजन सुनाए। श्री सुरेश शर्मा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें आर्य समाज के मंदिरों से बाहर नए नए लोगों में आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार करना होगा ताकि वे ईश्वर और धर्म का सही स्वरूप समझ सकें। उन्होंने जड़ और चेतन (साकार व निराकार) की पूजा का सही ढंग बतलाया। कार्यक्रम प्रभु कृपा से सफल रहा। श्रीमती विनोद गांधी, श्री सुलक्षण सूद, श्री रमेश सूद, श्री श्रवण बत्रा, श्री सतपाल मोंगा, श्री प्रदीप पासी, डा.वी.के.भनोट, श्री हर्ष आर्य, श्री आशीष भनोट, श्री राजिन्द्र बेरी, श्री बृजमोहन अरोडा, श्री संजीव गुप्ता, श्री अजय मोंगा, श्री ओम प्रकाश गुप्ता, श्रीमती स्वर्ण कौर, ममता शर्मा विशेष तौर पर सम्मिलित हुईं।

विजय सरीन प्रधान आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना

प्लेटो और स्वामी दयानन्द सरस्वती

ले०-शिवनारायण उपाध्याय 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

प्लेटो विश्व के दार्शनिक समाज में अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्ति रहे हैं। उनका जन्म यूनान के प्रसिद्ध शहर एथेन्स में 428 ई. हुआ था। उनका परिवार आस्तिक था। उनके पिता का नाम अरिस्टोन तथा माता का नाम पेरीक्शने था। उनकी माता चार्मिडेज की बहिन तथा क्रिटियाज की भतीजी थी। इन दोनों ने 404 ई. पू. के ओलीगार्ची (सामन्ते तथा जन तान्त्रि लोगों का संघर्ष) में भाग लिया था। बालक का वास्तविक नाम अरीस्टोक्लीज था परन्तु सुघड़ शारीरिक गठन और मजबूत शरीर के कारण कुछ समय बाद ही लोग उन्हें प्लेटों के नाम से पुकारने लग गए। बाल्यावस्था में ही इनके पिता अरिस्टोन की मृत्यु हो गई और माता ने पीरीलेम्पज नामक सामन्त से पुनर्विवाह कर लिया। इनके एडीमेन्टुज और ग्लौकोन नामक दो भाई और पोटोने नामक एक बहिन भी थी। सौतेले पिता से एन्टीफोन नामक सौतेला भाई भी इन्हें मिला।

स्वामी दयानन्द का जन्म 12 फरवरी 1825 ई. को गुजरात काठियावाड़ के एक छोटे से कस्बे टंकारा में हुआ था। इनके पिता का नाम करसनजी तिवाड़ी तथा माता का नाम अमृत बेन था। बालकपन में इन्हें मूलशंकर के नाम से सम्बोधित किया जाता था। इनका परिवार भी आस्तिक तथा शैव मत का अनुयायी था। माता धार्मिक एवं सरल हृदय महिला थी। इनके दो भाई तथा दो बहिनें भी थी परन्तु उनमें से केवल प्रेम बा ही जीवित रही शेष दो भाई और बहिन बाल्यावस्था में ही काल के ग्रास बन गए। इनका घर सम्पन्न था। पिता करसनजी लेन-देन का काम करते थे। साथ ही उन्हें जमींदारी भी प्राप्त थी। जामनगर राज्य के अन्तर्गत कौशिया ग्राम की जमीदारी उन्हीं के अधिकार में थी। उन्हें शासन की ओर से राजस्व वसूल करने का अधिकार था। वास्तव में करसन जी तिवाड़ी एक समृद्धिशाली, वैभव सम्पन्न भूमिपति तथा अधिकार सम्पन्न व्यक्ति थे।

प्लेटो के सौतेले पिता पीरीलेम्पज सामन्त थे परन्तु वे प्रसिद्ध विद्वान् पेरीक्लीज के मित्र भी थे। अत: उन्होंने प्लेटों की शिक्षा-दीक्षा पेरीक्लियन व्यवस्था के अन्तर्गत हुई। उन्होंने कुछ समय तक गणित के प्रसिद्ध विद्वान् यूक्लिड के चरणों में बैठ कर भी शिक्षा प्राप्त की। मेरा मानना है कि यह यूक्लिड का ही प्रभाव था जिससे आगे चल कर उन्होंने शिक्षा संस्थान के द्वार पर लिखवाया था कि यदि आप रेखा गणित नहीं जानते हैं तो संस्था में प्रवेश न करें। वास्तव में प्लेटो प्राकृतिक विज्ञान, नभ विज्ञान, गणित, ज्योतिष, राजनीति शास्त्र और दर्शन के अपने काल के अद्वितीय विद्वान् थे। उन पर सुकरात का प्रभाव अधिक था। उन्हें सुकरात के प्रिय शिष्य के रूप में भी जाना जाता है।

स्वामी दयानन्द की शिक्षा पांच वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने पर उनके पिता की देख-रेख में प्रारम्भ हुई। प्रारम्भ में पिता ने इन्हें देवनागरी लिपि में अक्षर लेखन का ज्ञान कराया। माता-पिता द्वारा कुल की शिक्षा भी दी गई। धर्म शास्त्रों के बहुत से श्लोक तथा सूत्रों के कंठस्थ कराया गया। आठवें वर्ष में इनको यज्ञोपवीत दिया गया। गायत्री मंत्र अर्थ सहित सिखाया गया।

फिर यजुर्वेद संहिता पढ़ाया जाना आरम्भ हुआ उसमें से रूद्राध्याय विशेष रूप से पढ़ाया गया क्योंकि परिवार शैव मत का मानने वाला था। कुछ व्याकरण तथा वेद पाठ की भी शिक्षा दी गई। दयानन्द की इच्छा व्याकरण, ज्योतिष और वैद्यक पढ़ने के लिए वाराणसी जाने की थी परन्तु पिता ने आज्ञा नहीं दी। कुछ समय टंकारा से दस किलोमीटर दूर एक विद्वान् पंडित के पास भी शिक्षा प्राप्त की। 21 वर्ष की अवस्था में इनके विवाह की तैयारी की गई परन्तु ये परमात्मा की खोज करना चाहते थे। अत: एक रात्रि को चुपके से भाग कर ब्रह्मचारी बन गए। एक बार पिता द्वारा पकड़ भी लिए गए परन्तु फिर भी अवसर पाकर भाग निकले। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती ने इन्हें सन्यास की दीक्षा दी। इसके बाद इनका देश भर में भ्रमण शुरू हुआ। भ्रमण के समय अलग-अलग स्थानों में इन्होंने योगाभ्यास सीखा। वेदांगों, दर्शन ग्रन्थों का अध्ययन किया। 20 वर्ष तक घूमने को बाद ये मथुरा में जन्मान्ध विरजानन्द सरस्वती नामक व्याकरण के प्रकाण्ड पंडित की सेवा में पहुंचे और उनसे वैदिक व्याकरण का अध्ययन किया और आर्ष-अनार्ष ग्रन्थों का भेद जाना। गुरू दक्षिणा में जीवन भर वेद विद्या का प्रचार करने का प्रण किया। फिर आजीवन देश में घूम-घूम कर अंध परम्पराओं अन्ध विश्वासों, बाल विवाह, अनमेल विवाह, छुआ-छूत, मूर्ति पूजा, फलित ज्योतिष आदि का खण्डन तथा सर्व शिक्षा, विधवा विवाह, एकेश्वर की उपासना तथा वेद-विद्या का प्रचार करते रहे।

सुकरात को जनतांत्रिक शासन द्वारा विष पान कराये जाने का प्लेटो पर गम्भीर प्रभाव पड़ा। इनके मन में जन तांत्रिक शासन के प्रति अरूचि हो गई। इनके अनुसार जनतांत्रिक शासन में न्याय पाना सामान्य व्यक्ति के लिए असंभव सा है। नेता लोग जनता की भावना को उभाड़ कर अन्याय को भी न्याय का रूप देने में सफल हो जाते हैं। यह शासन तभी सफल हो सकता है कि जब नेता दृढ़ विचार वाला और विद्वान् हो।

न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म को ठीक से जान कर जनता को न्याय और धर्म के मार्ग पर अग्रसर करने की शक्ति रखता हो। फिर इनका परिवार तो सामन्तवादी था। जब 403/404 ई. पू. में सामन्तों और जनतांत्रिक लोगों में संघर्ष हुआ तो उनके सम्बन्धियों ने प्लेटों को राजनीति में प्रवेश करने को बाध्य कर दिया परन्तु जब उन्होंने देखा कि सामन्तवादी लोगों की नीति हिंसा पर आधारित है और सुकरात को भी अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया तो प्लेटों ने सामन्त शाही से अपने को अलग कर लिया परन्तु जनतंत्र के पक्ष को भी स्वीकार नहीं किया। सुकरात की मृत्यु के बाद प्लेटों मारगा चले गए और यूकिलड के पास रहने लगे परन्तु कुछ समय बाद ही वापस एथेन्स में आ गए।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सीधा राजनीति में भाग नहीं लिया। भारत में उस काल में कोई राजनीति संस्था थी भी नहीं। वे तो देश भर में शिक्षा प्रचार और विशेष रूप से शिक्षा प्रचार पर कार्य करने लगे। देश से कुरीतियों, अन्ध विश्वासों को दूर भगाना उनका मुख्य उद्देश्य रहा। देश की गरीबी भी उनकी चिंता का कारण थी। वे देश से विदेशी शासन को हटाना चाहते थे परन्तु उस समय की स्थिति ऐसी नहीं थी कि वे विदेशी सत्ता के विरूद्ध कोई आन्दोलन छेड़ देते।

प्लेटो का राजनीतिक सिद्धान्त यूनान के सामुदायिक जीवन के विकास से जुड़ा हुआ है। समुदाय में रहकर मनुष्य एक अच्छा मनुष्य बनता है। फिर मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य एक श्रेष्ठ जीवन समाज में रहकर समाज के सहयोग से ही व्यतीत कर सकता है। फिर समाज का अर्थ शहर राज्य ही है। राज्य मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही होता है। मनुष्य एक दूसरे से स्वतंत्र नहीं है परन्तु दूसरे मनुष्यों से सहायता और सहयोग से ही विकास कर सकते है। इसलिए वे सब इकट्ठा होकर समुदाय के रूप में एक स्थान पर निवास करने लगते हैं और एक दूसरे की सहायता और सहयोग प्राप्त करते हैं। फिर इस इकट्ठा रहने के स्थान को शहर का नाम देते हैं और यहीं से फिर वर्ग विभाजन और श्रम की विशेषता का सिद्धान्त लागू हो जाता है। प्लेटों के वर्गों में सबसे नीचे स्थान श्रमजीवी का होता है उसके ऊपर सैनिक वर्ग होता है और सबसे ऊपर संरक्षक वर्ग होता है। राज्य की बुद्धिमत्ता संरक्षक वर्ग के छोटे से समुदाय के पास रहती है। यही वर्ग राज्य के लिए कानून बनाता और उन्हें लागू करता है। राज्य का साहस और बल सैनिक वर्ग में रहता है राज्य की व्यवस्था इस बात पर कायम रहती है कि शासित लोग शासक लोगों की अधीनता में कानून का पालन करते हुए रहें। हर व्यक्ति अपने कार्य में निमग्न रहे और दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप न करे। राजनीति रूप से सबको न्याय मिले। स्त्रियों और बालक-बालिकाओं को भी समाज में उचित स्थान मिले। एक आदर्श शहर राज्य में स्त्रियों को भी पुरूषों के समान प्रशिक्षण दिया जावे। स्त्रियां घर में रहकर केवल बालक-बालिकाओं की देख-रेख में ही नहीं लगी रहें। वे भी संगीत, शारीरिक व्यायाम और सैनिक कार्यों में पुरूषों के समान भाग लें। यह तो तय है कि शारीरिक शक्ति में स्त्रियां पुरूषों से निम्न स्तर पर हैं परन्तु प्राकृतिक गुण दोनों के अन्दर समान है और जहां तक उनकी प्रकृति अथवा प्राकृतिक स्वभाव की बात है वे मनुष्य के

(शेष पृष्ठ 6 पर)

भोग और भाग का अनुपात

ले.-नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में जीवन यापन करते समय अपने भोग और अपने लिए निर्धारित भाग के अनुपात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि हम अपने निर्धारित भाग से अधिक सुख सुविधाओं ऐश्वर्य का उपभोग करते हैं तो निश्चित रूप से हम उस अधिक उपयोग के लिए दूसरों के ऋणी हो जाते हैं। सामान्य जीवन में अक्सर यह ऋण हमें कई बार दिखाई भी नहीं देता। भोग की अधिकता में ऋण दिखाई ना देने का कारण कुछ तो हमारी अल्पज्ञता अबोधता है दूसरा उस ऋण को चुकाने के लिए उदासीनता या फिर नास्तिक चार्वाक के कथन पर आस्था **''ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत''** यानि उधार लो घी पियो और भूल जाओ।

अब इन पर एक एक करके विचार करते हैं। किसी मित्र ने हमें जलेबी खिलाई तो हम पर हजारों व्यक्तियों का ऋण आ गया क्योंकि उस जलेबी के बनने में हजारों लोगों का हाथ हैऔर चूंकि हमने उसका सेवन किया तो उन सभी का ऋण हम पर हो गया। सामान्य रूप से हमें इस बात का बोध हमारी अबोधता, अल्पज्ञता के कारण नहीं होता। जैसे जलेबी बनाने में गेहूं किसान ने खेत में बोया काटा, चक्की में पीसा, हलवाई ने प्रयोग किया ऐसे ही चीनी बनने से पूर्व गन्ना बोना काटना मिल में चीनी का बनना फिर प्रयुक्त ईंधन और कढ़ाई के बनने में कितने ही लोगों का हाथ है। इस प्रकार जलेबी खाने से जाने अनजाने हजारों लोगों का ऋण हम पर आ गया।

यह तो हमारी अबोधता के कारण हुआ पर कई बार हम इसके प्रति उदासीनता भी बरतते हैं। सुबह के समय सैर के लिए पार्क में गए पेड़ों से प्राप्त आक्सीजन और पुष्पों की सुगंध को जी भर कर लंबे लंबे श्वास लेकर ग्रहण किया। परंतु स्वयं कभी पेड़ या पुष्प लगाकर उस ऋण से उऋण होने का प्रयास नहीं किया। धीरे-धीरे इन सामाजिक ऋणों के प्रति उदासीनता इतनी प्रबल होती चली गई कि हम नास्तिक चार्वाक के कथन पर चलने लगे उधार लो घी पियो और मौज करो।

परंतु अपने भाग अर्थात् ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत हमारे पूर्व के कर्मों के फलों के आधार पर निश्चित की गयी मात्रा से अधिक धन संपत्ति ऐश्वर्य सुखों के भोग से हम पर अनेकों ऋण चढ़ जाते हैं। यह ऋण कर्म फल सिद्धांत के अन्तर्गत हमारे कष्टों दु:खों का कारण बनते हैं। इन आगामी कष्टों, दु:खों से मुक्ति का मार्ग क्या है इसके लिए हमें अपने भाग और भोग के अनुपात को ठीक रखना होगा। भाग और भोग के अनुपात को सही करने के लिए हमें अपने जीवन में भोगों को कम से कम केवल आवश्यकतानुसार रखना पड़ेगा। व्यर्थ संग्रह, भौतिक सुख साधनों का एकत्रीकरण हमारे भोगों को बढ़ाता है जो अंतत: हमारे बंधनों और दु:ख का कारण बनता है। इसलिए हमें जीवन में अपने भोगों को न्यूनतम अर्थात् अपनी व्यर्थ की इच्छाओं पर नियंत्रण और मन को अपने वश में रखना चाहिए ताकि भोग भाग से अधिक ना हो सकें।

सामान्य विनिमय की दृष्टि से भी देखे तो यदि जेब में पैसा है तभी हम बिना उधार लिए वांछित वस्तु को खरीद सकते हैं। अर्थात् यदि हम क्रय शक्ति को बढ़ाना चाहते हैं तो हमारे पास जेब में अधिक धन होना चाहिए। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हमें अपने भोग बढ़ाने से पूर्व अपना भाग बढ़ाना होगा। अपने भोगों का भाग बढ़ाने के लिए सरल सिद्धांत है कि हमें जीवन से सदा निष्काम भाव से परोपकार के यज्ञीय कार्य करने चाहिए। सर्वहितकारी परोपकार के कार्य करने से ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अंतर्गत अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् के सिद्धांत से हमें उन यज्ञीय कार्यों का फल अच्छी किस्मत नियति या प्रारब्ध के भोगों के रूप में मिलता है और हमारा भाग स्वत: बढ़ जाता है।

वैसे भी मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में मनुष्य अपनी अल्पज्ञता, अल्पशक्ति, एकदेशीयता के कारण अपने जीवन के कार्यों के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहता है। यही समाज के अवयवों की एक दूसरे पर निर्भरता ही परस्परतंत्रता के सिद्धांत को जन्म देती है। अर्थात् सामान्य जीवन में जाने अनजाने ऋण लेते और ऋण देते रहते हैं। ऐसी स्थिति में वाणिज्य के सामान्य सिद्धांत का पालन करें कि मेरा लिया हुआ ऋण कभी दिए हुए ऋण से ज्यादा ना होने पाए और हम जीवन में सदा लिए हुए ऋण अर्थात् दूसरों के अपने प्रति किए गए उपकार को स्मरण रखें और परोपकार के कार्यों से उन ऋणों से उऋण होने का प्रयास किया करें। हम सदा प्रयास करें और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करें कि मेरे जीवन में मेरे भोग मेरे भाग से अधिक ना हो जायें और हम सदा वेद के इस आदि का पालन करूं **''मा अहं अन्य कृतेन भोजम्''** अर्थात् मैं किसी दूसरे की कमाई ना खाउं। मैं अपनी ही कमाई पर निर्भर रहूं।

आर्य समाज बटाला ने गरीबों को बांटी सहायता सामग्री

आर्य समाज औहरी चौक बटाला में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। बुधवार से शुरू हुआ पांच दिवसीय कार्यक्रम भजन संध्या व वेद प्रचार के अन्तिम दिन हवन यज्ञ किया गया। समारोह में मुख्यातिथि के रूप में श्री हरगोबिन्दपुर से विधायक बलविन्द्र सिंह लाडी और मुख्य वक्ता के रूप में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के पूर्व वाइस चांसलर और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान प्रो. स्वतंत्र कुमार शामिल हुये। आर्य समाज की ओर से प्रधान श्री प्रविन्द्र चौधरी व साथियों ने अतिथियों का स्वागत किया और कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। विधायक बलविन्द्र सिंह लाडी ने कहा कि समाज को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बताये मार्ग पर चलना चाहिये। प्रो. स्वतंत्र कुमार ने कहा कि स्वामी जी ने सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के साथ साथ महिलाओं को शिक्षा के अधिकार के लिये उन्होंने संघर्ष किया। उन्होंने कहा कि आज का युवा नशे की तरफ आकर्षित हो रहा है, उनमें राष्ट्र भक्ति का भाव बढ़ाने के लिये राष्ट्र पुरुषों व क्रान्तिकारियों के जीवन से परिचित करवाना होगा तभी आज का नौजवान अपने समाज को सुधार सकता है। इस मौके पर विधायक बलविन्द्र सिंह लाडी ने सभी अतिथियों के साथ जरूरतमंदों की सहायता के लिये सामग्री का वितरण किया। इससे पूर्व शनिवार रात्रि में भजन संध्या में आर्य भजनोपदेशक पंडित जगत वर्मा ने भजन गायन किये। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद पंजाब के संरक्षक जे.एन. शर्मा, महादेव सेवा समिति के प्रधान विजय प्रभाकर, बलविन्द्र मेहत्रा वीरेन्द्र विज, प्रो. अश्विनी कांसरा, पवन कुमार शर्मा, प्रो. नाथ शर्मा, पंडित सुरेश शास्त्री, प्रो. सोहन लाल प्रभाकर, हरी कृष्ण महाजन, भुवनेश वर्मा, प्रिंसीपल रजनी बहल, विजय अग्रवाल, जोगिन्द्र पाल वर्मा, स्त्री आर्य समाज की अध्यक्षा शशि अग्रवाल, रतन लाल, दलजिन्द्र सिंह साबी, गुरदीप सिंह, अजय सरीन, मनप्रीत सिंह, राम प्रकाश शामिल हुये।

वेद सप्ताह समारोह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना के तत्वावधान में दिनांक 20 नवम्बर सोमवार से 26 नवम्बर रविवार 2017 तक वेद सप्ताह समारोह मनाया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी आनन्दवेश जी गुरूकुल शुक्रताल, आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ महोपदेशक आगरा के प्रवचन तथा श्री सत्यदेव शास्त्री भजनोपदेशक बरेली के मधुर भजन होंगे। इस अवसर पर आप सभी आर्य जन अपने इष्टमित्रों एवं परिवार सहित पधार कर भजनोपदेश सुनें और धर्मलाभ उठाएं।

सुरेन्द्र कुमार टण्डन मन्त्री आर्य समाज

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज ओहरी चौक बटाला पंजाब के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो वैदिक रीति से सभी संस्कारों को कराने में सक्षम हो। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। आवास का प्रबन्ध आर्य समाज में नि:शुल्क होगा। इच्छुक सम्पर्क करें।

प्रविन्द्र चौधरी प्रधान आर्य समाज
मो०. 9888167678

पृष्ठ 4 का शेष-प्लोटों और स्वामी...

सभी कार्यो में यहां तक की युद्ध में पुरूषों की समानता कर सकती हैं। ठीक प्रकार से योग्य स्त्रियों को कार्यालयों में कार्य करने के लिए अफसर के रूप में संरक्षक मण्डल में भी चुना जाना चाहिए। प्लेटों का जन तंत्र पर सबसे बड़ा आक्षेप यह है कि राजनेता लोग अपने कर्त्तव्य को बिल्कुल नहीं जानते हैं और जब शासन ठीक से नहीं चलता तो जनता कल्पना करती है इनको हटाकर कुलीन तंत्र स्थापित करने की और जब वह भी ठीक से अपने कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं करता तब तानाशाह शासक स्थापित हो जाता है। तानाशाह शासन फिर जनतंत्र को उत्पन्न करता है और इस प्रकार शासन परिवर्तित होता रहता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती भी मानते हैं कि मनुष्य अकेला रहकर अपना शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास नहीं कर सकता है। इसलिए वे लोग मिलकर किसी नदी, तालाब अथवा पहाड़ी की तहलटी में गांव बसाकर रहते थे। उन्होंने गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वेद के आदेशानुसार सम्पूर्ण समाज को चार भागों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में विभाजित किया था। ब्राह्मण वर्ग बुद्धिजीवी वर्ग था और पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना और यज्ञ कराना, समाज और स्वयं के लिए दान लेना और दान देना उसका मुख्य कर्त्तव्य था। क्षत्रिय वर्ग का मुख्य कर्त्तव्य पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना और यज्ञ कराना के साथ-साथ प्रजा की रक्षा और पालना करना था। वैश्व का कर्त्तव्य धन-धान्य की उत्पत्ति, उसका संरक्षण और उचित विभाजन था। शूद्र वर्ग का कार्य इन तीनों वर्गों के कार्यों में समन्वय (सामञ्जस्य) उत्पन्न करना होता था। समाज में स्त्रियों को उचित सम्मान प्राप्त था। स्त्री और पुरूष दोनों को वेदाध्ययन का अधिकार प्राप्त था। शिक्षा का अधिकार मानव मात्र को है स्वामी दयानन्द की यह मान्यता वेदानुकूल है। स्त्रियों के विषय में वे सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास तीन में लिखते हैं-जो स्त्रियां वेदादि शास्त्रों न पढ़ी हों तो यज्ञ में स्वर सहित मंत्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सकें। भला जो पुरूष विद्वान् और स्त्री अविदुषी होवे और स्त्री विदुषी और पुरूष अविद्वान् हो तो नित्य प्रति घर में देवासुर संग्राम मचा रहे। फिर सुख कहां ?

देख आर्यावर्त के राजपुरूषों की स्त्रियां धनुर्वेद और युद्ध विद्या भी अच्छी प्रकार जानती थी क्योंकि न जानती होती तो कैकयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों कर जा सकती ? वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित और शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में राजधर्म का विस्तृत वर्णन किया है। वे जनतंत्र के समर्थक हैं। वे लिखते हैं-राजा और प्रजा के पुरूष मिलकर सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धि कारक राजा-प्रजा के संबंध रूप व्यवहार में तीन सभा अर्थात् विद्यार्थ सभा, धर्मार्य्य सभा और राजार्य्य सभा नियत करके बहुत प्रकार के प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या स्वातंत्र्य धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें। उस राज धर्म को तीनों सभा संग्रामादि की व्यवस्था और सेना मिलकर पालन करें। जिस लिए अकेला राजा स्वाधीन वा उन्मत होकर प्रजा का नाशक होता है। इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन नहीं करना चाहिए।

राज्य में अधिकारी कैसे हों इस पर वे लिखते हैं-महा विद्वानों को विद्या सभा अधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्म सभा अधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरूषों को राज सभा के सभासद् और जो उन सबमें सर्वोत्तम गुण, कर्म, स्वभाव युक्त महान् पुरूष हो उसको राज सभा का पति रूप मानकर सब प्रकार से उन्नति करें। तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के आधीन सब लोग वर्ते। फिर स्वामी दयानन्द ने मनु स्मृति के अनुरूप राज्य में सत्ता का विकेन्द्रीयकरण किया है। एक ग्राम, दस ग्राम, बीस ग्राम, सौ ग्राम, और हजार ग्रामों में कैसे सुव्यवस्था स्थापित हो इसके लिए सत्ता का उचित विभाजन किया है। इस दृष्टि से स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्लेटों के शहरी राज्य के अधिक विस्तृत राज्य की व्यवस्था को ढंग से रखने में सफलता प्राप्त की है।

प्लेटो ने अपने सिद्धांतों के प्रचार प्रसार हेतु लम्बी-लम्बी यात्राएं की। वह तीन बार इटली तथा सीसली गया। उसने सीराक्यूज की शिक्षा पद्धति और पाठ्यक्रम के निर्माण में अहम भूमिका निभाई। उसने एथेन्स में एक विद्यालय स्थापित किया। जिसमें धर्म शास्त्रों के अतिरिक्त गणित, राजनीति, प्राकृतिक विज्ञान आदि कई विषयों का अध्ययन कराया जाता था। प्लेटो स्वयं अध्यापन का कार्य करता था। आगे चल कर यही विद्यालय यूरोप का प्रथम विश्व विद्यालय कहलाया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, बिहार, उड़ीसा, बंगाल तथा संयुक्त प्रान्त में घूम-घूम कर वैदिक ज्ञान विज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। देश के बुद्धि जीवियों पर उनके उपदेशों का गंभीर प्रभाव पड़ा। उदयपुर, जोधपुर, शाहपुरा, इन्दौर, बड़ौदा आदि कई राज्यों के राजा लोग उनके प्रति श्रद्धा रखने लगे। अपने सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार को स्थाई रूप देने के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज के सदस्यों द्वारा कई गुरूकुलों और शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़े गए आन्दोलनों में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

प्लेटो और दयानन्द दोनों ही ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि मानते हैं। प्लेटो ने आत्मा को अनादि मानने के लिए आठ तर्क दिए है। ईश्वर को विश्वात्मा के रूप में स्वीकार किया है। कार्यरूप प्रकृति को नश्वर माना है प्लेटो पुनर्जन्म को स्वीकार करता है। मृत्यु के बाद क्या होता है? इस पर उसने एक कहानी भी सुनाई है। वह कर्म फल को स्वीकार करता है। स्वामी दयानन्द के विचार इस विषय में प्लेटो से मिलते हैं। परन्तु प्लेटो समाज के अविद्याजन्य कृत्यों का उतनी तीव्रता से खण्डन नहीं करता है जितना की स्वामी दयानन्द/स्वयं उन कृत्यों को जिनका वह विरोधी है समाज के नियम मानकर करना भी है।

141वां जन्मोत्सव समारोह

आर्य जगत के लौह पुरूष फील्ड मार्शल, पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का 141वां जन्मोत्सव दयानन्द मठ दीनानगर में बड़े ही हर्षोल्लास एवं उत्साह सहित 2 जनवरी 2018 को मनाया जा रहा है। दिनांक 25 दिसम्बर 2017 से 1 जनवरी 2018 तक प्रात: 5 बजे निरन्तर दीनानगर में प्रभात फेरी एवं प्रात: 6:30 बजे स्वामी जी के जीवन पर कथा एवं बृहद यज्ञ जिसकी पूर्णाहुति 2 जनवरी सुबह 9 बजे होगी। 10:00 बजे विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आए हुए बच्चों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा। इस समारोह में आप आर्य महानुभावों की सहभागिता हम सहृदय चाहते हैं। समारोह में आपके आगमन से शोभा बढ़ेगी, जिसके लिए मठ परिवार आपका सदैव आभारी रहेगा।

स्वामी सदानन्द अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज रमेश नगर करनाल हरियाणा के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो वैदिक रीति से सभी संस्कारों को कराने में सक्षम हो। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। आवास का प्रबन्ध आर्य समाज में नि:शुल्क होगा। इच्छुक सम्पर्क करें।

यशपाल भाटिया प्रधान आर्य समाज

9034860417

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

भजन संध्या तथा सम्मान समारोह

आर्य सद्भावना सत्संग समिति अमृतसर द्वारा 22 नवम्बर 2017 दिन रविवार को पाँचवीं भजन सन्धया तथा गायकों का सम्मान समारोह प्रतिष्ठित आडीदोरियम विरसा विहार में साँय तीन से छः बजे तक आयोजित किया गया। इस समारोह में इस बार स्थानीय गायक/गायिकाओं के साथ-साथ जालन्धर से श्रीमती रश्मि जी घई तथा सम्मानीय स्वामी विशोकायति जी ने भी अन्य गायकों के सुरों में अपने सुर मिलाकर कार्यक्रम को चार चाँद लगाये।

जहाँ स्थानीय गायकों ने अपनी-अपनी प्रस्तुति से कार्यक्रम को सुशोभित किया वहाँ एक छः वर्षीय बाल कलाकार संगीत सोनी आकर्षण का केन्द्र रहा। श्री विवेक आर्य पौत्र श्री सत्यपाल जी 'पथिक', कु० शिवानी जी, श्री सोनी जी, श्रीमती माधुरी-कु. महक (सपुत्री व दोहती श्री वीरेन्द्र शर्मा जी) ने अपने प्रभु भक्ति व ऋषि महिमा के भजन सुनाकर श्रोताओं का मन मोह लिया। श्रीमती रमा वैद्य, श्री० विजय बधावन तथा कुमारी साक्षी सपुत्री श्री विजय शास्त्री ने भी अपने मधुर भजन प्रस्तुत किये। श्रीमती ज्योतिषा मेहता धर्मपत्नी श्री विपुल मेहता ने अपनी मधुर आवाज में भजन प्रस्तुत कर सब श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

न्यूजीलैण्ड से पधारे इस कार्यक्रम के मुख्य केन्द्र बिन्दु व गायक श्री विक्रम आर्य सुपुत्र श्री सत्यपाल जी 'पथिक' ने सबसे अन्त में अपने मधुर भजन सुनाकर सारा आडीटोरियम आहलादित कर दिया। श्री सत्यवाल 'पथिक' जी द्वारा रचित भजन 'मावां ठण्डियां छावां' सुनाकर सभी नर नारियों की आखें नम कर दी। श्री विक्रम आर्य ने सभी गायक/गायिकाओं को प्रोत्साहन राशि देने हेतु आर्य सदभावना सत्संग समिति अमृतसर को दस हजार रूपये सहयोग राशि प्रदान की कार्यक्रम में आपके साथ न्यूज़ीलैण्ड से आपकी धर्मपत्नी व दो बच्चे भी पधारे।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण यह रहा कि श्रीमती रश्मि घई जी धर्मपत्नी श्री अरविन्द जी घई को संस्था ने ''स्वर कोकिला'' सम्मान से सम्मानित किया गया। बेटे विवेक आर्य पथिक को ''कंठ सम्राट'', कुमारी शिवानी आर्या को ''कण्ठ साम्राज्ञी'' व बेटी महक को ''कंठ सुकुमारी'' के सम्मान से सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महेन्द्रपाल जी मेहता ने की। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद को श्री सुधीर ठुकराल सपुत्र श्री इन्द्रजीत ठुकराल ने तथा विशिष्ट अतिथि पद को श्री विक्रम जी आर्य ने सुशोभित किया। प्रसाद वितरण का उत्तरदायित्व एवं सेवाभार श्रीमती ममता आर्या व दिनेश आर्य ने वहन किया। अमृतसर की आर्य समाज नवाँकोट, आर्य समाज पुतलीघर, आर्य समाज लक्ष्मणसर, आर्य समाज हरिपुरा, आर्य समाज बाज़ार श्रद्धानन्द, आर्य समाज शक्तिनगर, आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम, आर्य समाज माडलटाऊन के प्रमुख सदस्य व अधिकारी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर के प्रमुख सदस्य व अधिकारी और श्री कुलदीप जी शर्मा विशेष रूप से कार्यक्रम में शामिल हुए। आर्य सदभावना सत्संग समिति की सँचालिका श्रीमती रेनु घई ने मंच संचालन का कार्यभार संभाला। श्रीमती सीता खन्ना, श्रीमती प्रमिला सेन श्रीमती रविता पिपलानी, श्री० नीरज गोसाई, श्री. शशि अग्रवाल, श्री. ममता आर्य, श्री. कमलेश चोपड़ा जी व अन्य अनेक भाई बहिनों ने विशेष रूप से सहयोग दिया। सभी गणमान्य मुख्य अतिथिओं को सम्मानार्थ डिज़िटल घड़ियाँ व अन्य अनेक उपहार दिये गये। **-डॉ. स्वामी मधुरानन्दा संरक्षिका**

रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिलका द्वारा 7 अक्तूबर 2017 को सर्वहितकारी विद्या मन्दिर फाजिलका में इस विद्यालय की दो सौ से अधिक संख्या होने के कारण विशेष श्रेणी के अन्तर्गत रंग भरो प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें 524 छात्र/छात्राएँ सम्मिलित हुए। अतः इस विद्यालय का ही परिणाम घोषित किया जा रहा है। शेष विद्यालयों का अलग से घोषित किया जाएगा।

प्रतियोगिता संयोजक वेदप्रकाश शास्त्री ने बताया कि यह प्रतियोगिता प्रीनर्सरी, नर्सरी, एलकेजी, यूकेजी, पहली एवं दूसरी छः ग्रुपों में आयोजित की गई।

प्रीनर्सरी में रहमत कम्बोज, आरूही और देवचरण ने क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। नर्सरी कक्षा में हिमांशु, अक्षिता और पारस क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय रहे। एलकेजी में माधव, सन्ध्या एवं समद-जीत सिंह क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहे। यूकेजी में आराध्या, डिम्पल, अर्णव बत्रा ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। पहली कक्षा में आंचल, प्रियांशी, समर क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे। दूसरी में खुशी, नव्या तता दीक्षान्त ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया।

शास्त्री जी ने विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती मधु शर्मा एवं छात्र/छात्राओं, शिक्षकों तथा अभिभावकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

गरीब छात्राओं को स्कूल में बूट बांटें

आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर के प्रांगण में हिन्दू आर्य पाठशाला की छात्राओं को स्कूल बूट बांटने का कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम की शुरूआत वैदिक महायज्ञ से की गई। इस महायज्ञ में यजमान पद को सुशोभित श्री विवेक मल्होत्रा आईटीओ एवं उनकी धर्मपत्नी ने किया। उन्होंने बहुत ही श्रद्धा एवं उत्साह से यज्ञ किया। इसके पश्चात आर्य समाज के वयोवृद्ध सेवक राम प्रसाद जैसवाल को सम्मानित किया गया। उन्होंने लगभग चालीस साल तक आर्य समाज में सेवक के पद पर रह कर बहुत ही मेहनत तथा लग्न, ईमानदारी के साथ अपना कर्त्तव्य निभाया। सभी ने तालियों के साथ उनका आदर सम्मान किया।

सुरेन्द्र वोहरा जिन्होंने आर्य समाज मंदिर में पहली बार स्टेज का काम बहुत निपुणता के साथ निभाया। इसके पश्चात हिन्दू आर्य पुत्री पाठशाला की छात्राओं को निशुल्क बूट वितरित किये गये ताकि सर्दी में यह गरीब बच्चे ठंड से बच सकें। वैसे तो आर्य समाज मंदिर समय समय पर इसी प्रकार के सामाजिक व धार्मिक कार्य करता रहता है। इस विशेष कार्यक्रम में पहुंचे सदस्यों में से छावनी आर्य समाज मंदिर के प्रधान श्री विजय आनन्द जी, महामंत्री श्री मनोज आर्य जी और भी कई सदस्य विशेष रूप से पधारे। इनके साथ श्री पंकज मल्होत्रा श्री सलूज जी, हेमन्त स्याल, श्री राम दर्शन, श्री वेद प्रकाश, श्री शान्ति भूषण शर्मा, श्री कुलदीप मैनी, श्रीमती गीता जी, श्रीमती सुमित्रा छाबड़ा, श्रीमती अनिता भाटिया, श्रीमती राम सखी , श्रीमती राज छाबडा, श्रीमती सीता मैनी तथा स्कूल के स्टाफ तथा बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। बाद में शान्ति पाठ के पश्चात सभी को प्रसाद वितरण किया गया। विशेष अतिथि श्री विवेक मल्होत्रा आईटीओ तथा उनकी धर्मपत्नी जी को स्मृति चिन्ह देकर आर्य समाज मंदिर के सभी सदस्यों ने सम्मानित किया।

-राजीव गुलाटी महामंत्री आर्य समाज

कौशल विकास योजना के तहत चेतराम इंस्टीच्यूट में कौशल मेला करवाया

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अधीन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रमुख संस्था महाशा चेतराम आर्य मैमोरियल टैक्नीकल इंस्टीच्यूट में कौशल मेले का आयोजन किया गया। विधायक दलवीर सिंह गोल्डी ने मुख्य मेहमान के तौर पर उपस्थिति दर्ज करवाई जबकि इस मौके पर शहर के प्रमुख समाज सेवक एवं आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य महाशा प्रतिज्ञा पाल भी विशेष तौर पर मौजूद रहे। सबसे पहले श्रीमती आरती तलवाड़ ने श्री प्रह्लाद कुमार जी की तरफ से आए हुये मेहमानों का स्वागत किया। संस्था की इंचार्ज निशा मित्तल ने कहा कि देशभर में इस योजना के तहत 3350 प्रशिक्षण केन्द्र चल रहे हैं तथा पंजाब में भी चल रहे हैं ऐसे 200 प्रशिक्षण केन्द्रों पर बच्चों को मुफ्त प्रशिक्षण, किताबें एवं वर्दियां उपलब्ध करवाई जा रही है। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण पूरा होने पर विद्यार्थी को अपना रोजगार चलाने के लिये बैंकों द्वारा मुद्रा योजना के तहत बिना गारंटी कम ब्याज दर पर 50 हजार से 10 लाख रुपये तक का कर्ज दिया जाता है। इस अवसर पर आर्य समाज धूरी के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार गर्ग, पवन गर्ग कोषाध्यक्ष, सतीश पाल उप प्रधान, श्री सोम प्रकाश जी, श्री वासदेव जी आर्य एवं आर्य समाज के अन्य सदस्य एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

-निशा मित्तल

वेदवाणी

पापी और झूठे प्रभु के बन्धन में पड़ते हैं

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद् वदन्तं उभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते।।

–ऋ० ७।१०४।१३; अ० ८।४।१३

ऋषिः–**वसिष्ठः।।** देवता–**सोमः।।** छन्दः–**निचृत्त्रिष्टुप्।।**

विनय–जगदीश्वर सोमरूप से सब जगत् का पालन–पोषण कर रहे हैं। सोम–प्रभु के जीवनदायी रस को पाकर ही सब संसार बढ़ रहा है, पुष्ट हो रहा है, परन्तु ये भगवान् पाप को कभी नहीं बढ़ाते; इनका यह सोमरस पाप को कभी नहीं पहुँचता और सब पापों का स्रोत–मूल, जो असत्यता है, उसे तो परमेश्वर का जीवनरस मिलता ही नहीं है।

जब मनुष्य सदा इस प्रकार वर्त्तमान 'सत्' के विरुद्ध अपने अन्दर कुछ असत् की रचना करता है, असत्–पर–असत्–दुहरी बातों को अपने अन्दर धारण करता है, तो यह 'मिथुया धारयन्' मनुष्य अपने इस दूसरे असत् द्वारा अपने–आपको आच्छादित कर लेता है और सत्य की सोम–धारा से अपने को वञ्चित कर लेता है। प्रत्येक पाप का करना भी क्रिया द्वारा सत् से इन्कार करना है, अतः ज्यूँही मनुष्य असत् की अपने में रचना करता है या ज्यूँही वह क्रिया से सत्य–विरुद्ध कर्म (पाप–वृजिन) करता है, त्योंही उसका सत्स्वरूप जीवनरसदायी सोम से सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है, वह ईश्वरीय जगत् से पृथक् हो जाता है, मानो वह परमेश्वर के बन्धनागार में पड़ जाता है, अपने असत् द्वारा ही वह ढक जाता है, वह बँध जाता है। जहाँ परमेश्वर सोमरूप से सब ठीक चलने वालों को जीवन देकर बढ़ा रहे हैं, वहाँ इन्द्र के ('इदं धारयिता') रूप से ये ही परमेश्वर विपरीतगामी को पृथक् करके बाँधने वाले भी हैं। इस प्रकार असत्य बोलने वाला या पाप करने वाला जीवन–रस से वञ्चित होकर, सूखकर नष्ट हो जाता है। इसीलिए वर्जनीय होने से पाप का नाम 'वृजिन' है तथा पाप ही 'रक्षः' कहलाता है, चूँकि इससे अपने–आपको सदा रक्षित रखना चाहिए। इस वृजिन को, 'रक्षः' को, वह परमेश्वर नष्ट ही कर देता है, कभी बढ़ाता नहीं है।

मनुष्य यदि इस सत्य को समझे, इसमें उसे तनिक भी सन्देह न हो, तो वह पाप करते हुए घबराये और असत्य बोलते हुए उसका कलेजा काँपे। संसार में यद्यपि हमें दीखता है कि परमेश्वर भी पाप को ही मदद दे रहा है और झूठे को बढ़ा रहा है, परन्तु यह हम क्षुद्र बुद्धिवाले अल्पज्ञों का भ्रम है। हम अल्पज्ञ नहीं देख सकते कि किस पाप का फल कब और कैसे मिलता है?

निर्वाण दिवस मनाया

दयानन्द पब्लिक स्कूल में दीपावली महोत्सव एवं महर्षि दयानन्द जी का निर्वाणोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। पं० योगराज शास्त्री जी ने मंत्रोच्चारण करके हवन यज्ञ सम्पन्न किया एवं सभी को दीपावली की शुभकामनाएं दी। स्कूल में कक्षा तृतीय से लेकर कक्षा पाँचवी तक के बच्चों के लिए Fancy Dress Competition रखा गया। कक्षा प्रथम एवं कक्षा द्वितीय तक के बच्चों के लिए कहानी प्रतियोगिता एवं कक्षा नर्सरी से कक्षा प्रथम तक के बच्चों ने कविता प्रतियोगिता में भाग लिया। फैंसी ड्रैस में कक्षा पाँचवी की सपना ने (प्रथम) कक्षाचतुर्थ के अर्श ने (द्वितीय) कहानी प्रतियोगिता में कक्षा प्रथम की पलक ने (प्रथम) राघव ने (द्वितीय) एवं कक्षा दूसरी की आसिफा ने (तृतीय) स्थान प्राप्त किया। कविता प्रतियोगिता में नर्सरी कक्षा की सृष्टि ने (प्रथम) दिव्या L.K.G (द्वितीय) स्थान प्राप्त किया। बच्चों ने खूबसूरत रगोलियाँ सजाकर स्कूल की सुन्दरता को चार चाँद लगा दिए गुनगुन मिताली, मनीषा वर्ग d की छात्राओं को सर्वश्रेष्ठ रंगोली पुरस्कार मिला। Candle Decoration में कक्षा सातवीं की खुशी ने (प्रथम) राधिका ने (द्वितीय) और राधा ने (तृतीय) पुरस्कार प्राप्त किया। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधकीय कमेटी के प्रधान श्री संत कुमार जी, विजय सरीन जी, श्री विनोद गाँधी एवं श्रीमती राजेश शर्मा जी ने निर्णायक एवं मुख्यातिथि की भूमिका निभाई। प्रिंसीपल मैडम ने आए हुए सभी सदस्यों का धन्यवाद किया एवं सभी छात्रों एवं अध्यापकों को दीपावली की शुभकामनाएँ दी। बच्चों को इस अवसर पर मिठाई भी बाँटी गई।

आर्य समाज धूरी का वार्षिक उत्सव व गायत्री महायज्ञ वेद प्रचार मनाया गया

आर्य समाज धूरी में दिनाक 08-11-17 से दिनांक 12-11-17 तक विश्व शान्ति गायत्री महायज्ञ व अध्यात्मिक दिव्य सत्संग का आयोजन हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। दिनांक 8-11-17 दिन बुधवार को आर्य सी० सै० स्कूल धूरी के प्रांगण में प्रातः 10:00 स्वामी ओमदत्त जी व महाशय प्रतिज्ञा पाल जी के द्वारा ओ३म् की पताका को फहराया गया इसके बाद स्वामी ओमदत जी व प्रतिज्ञा पाल जी को रथ पर विराजमान करके विशाल शोभा यात्रा का शुभारम्भ किया गया। पूरे धूरी शहर में शोभायात्रा के द्वारा वेदों का पढ़ने-पढ़ाने तथा घर-घर में (हवन) यज्ञ करने का संदेश दिया गया।

दिनांक 09-11-17 से 12-11-17 प्रातः काल वेद मन्त्रों के द्वारा हवन होता रहा। उसके उपरान्त बरेली से आए हुए संगीत रत्न भानु प्रकाश शास्त्री जी के भजन, व मेरठ से आये हुए स्वामी ओमदत्त जी का प्रवचन होता रहा। पूर्णाहूति के अवसर पर मुख्य मेहमान श्री पाले राम गुज्जर जी रहे, उनको आर्य समाज के अधिकारियों ने फूल माला से स्वागत किया गया। इस गायत्री महायज्ञ का शुभारम्भ सर्वप्रथम पं० शैलेश कुमार शास्त्री जी पुरोहित्व में एवं स्वामी ओमदत्त जी के ब्रह्मत्व में वृहदयज्ञ को वैदिक मंत्रों द्वारा सम्पन्न किया गया, इस यज्ञ के प्रथम मुख्य यज्ञमान आर्य समाज धूरी के महामंत्री प्रहलाद कुमार अपनी धर्मपत्नि व सहपरिवार सहित इस यज्ञ का शुभारम्भ किया, नित्य प्रति दिन नये जोड़े यज्ञमान बनते रहे। स्त्री आर्य समाज धूरी की प्रधाना कृष्णा आर्या, मंत्राणी मधुरानी, शिमला देवी, रेखा रानी, दर्शना देवी, उर्मिला देवी कुसुम गर्ग (कोषाध्यक्ष) एवं सभी यज्ञमान अपने पति पत्नि मिलकर विश्व शान्ति यज्ञ में आहूतियां प्रदान करते रहे।

इस वेद प्रचार उत्सव पर आर्य सी० सै० स्कूल, आर्य कालेज, यश चौधरी आर्य माडल स्कूल, महाशय चेतराम आर्य कालेज के सभी छात्र छात्राओं व अध्यापक अध्यापिका ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया, तथा आर्य समाज के सभी अधिकारी व सदस्यगण उपस्थित रहें। प्रधान विरेन्द्र कुमार गर्ग, आर्य समाज धूरी, पवन गर्ग कोषाध्यक्ष, सतीशपाल उपप्रधान, संरक्षक प्रि० आर. पी. शर्मा, कार्यकारी प्रधान सोम प्रकाश आर्य, श्याम आर्य, अशोक कुमार जिन्दल, अशोक गुप्ता, वासुदेव आर्य, डॉ. सुरजीत सरीन, राम पाल आर्य, राजीव मोहिल, रमेश आर्य, कर्मचन्द आर्य, जसवीर रत्न एडवोकेट, विकास शर्मा एडवोकेट, वचन लाल गोयल, डा. राम लाल, विजय कुमार गोयल, श्रीमति आरती तलवाड़ विवेक जिन्दल, विकास जिन्दल, अनिल कुमार, हरवीर सिंह , सतीश टंडन, सतीश मित्तल, राजेश आर्य, प्रदीप आर्य, प्रि० मोनिका वाटस, प्रि० वी एल कालीया, प्रि० निशा मित्तल व सभी सदस्यगण उपस्थित रहे, प्रधान विरेन्द्र कुमार गर्ग जी ने सभी को धन्यवाद किया और ऋषि लंगर का प्रसाद ग्रहण करने का निवेदन दिया।

–महामंत्री प्रहलाद कुमार आर्य, आर्य समाज, धूरी

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।